

पुवं श्यावाय रुशतीमदत्तम् dem Schwarzen eine Weisse 117, 8. पर्यः 62, 9. 4, 3, 9. 6, 72, 4. 8, 82, 18. पात्रः 3, 29, 3. 4, 11, 1. 51, 9. रुशदसानः 5, 15. वासः 7, 77, 2. अग्रि 6, 1, 3. 6, 1. उर्मयः 64, 1. गावः 3. उन्नपाः 8, 1, 33. वत्स 64, 5. ऊधम् 10, 31, 11. तन् 85, 30. 10, 75, 7.

2. रुशत् s. u. 1. रुष्

रुशम् 1) m. proparox. N. pr. eines Mannes RV. 8, 3, 13. 4, 2. VĀLAKH. 3, 9. pl. रुशमाः RV. 5, 30, 12. 15. AV. 20, 127, 1. — 2) f. आ N. pr. Ruçamā wettet mit Indra, wer schneller die Erde (भूमि) umlaufe; Indra umkreist die Erde, Ruçamā das Land Kurukshetra und gewinnt, PAÑĀV. Br. 25, 13, 3.

रुशेकु m. N. pr. eines Fürsten Bhāg. P. 9, 23, 30. Andere Bücher lesen रुषद्, उषद्, ऋषद् u. s. w.

1. रुष्, रुष्, रुशति (हिंसायाम्) Dhātup. 28, 126. रुशत् und रुषत्; रोषति (हिंसायाम्) Dhātup. 17, 42. रूष्यति रोषे, v. l. हिंसायाम् 26, 120. रुष् erhält keinen Bindevocal Kār. 5 aus Siddh. K. zu P. 7, 2, 10. अरुषत्: रोषा und रोषिता P. 7, 2, 48. Vop. 8, 79. partic. रुष्ट und रुषित P. 7, 2, 28. Vop. 26, 113. 1) unwirsch —, missmuthig —, widerwärtig sein, zürnen: हिन्दन्निव वषट्कुण्डन्निव °दृषन्निव die Ausg., पेषयन् Comm.) बुद्धयात् ऋच. Ça. 9, 7, 12. सा प्रूषन्तिपाति रिफती रुशती AV. 3, 28, 1. या समा रुशत्येति das Jahr, das sich übel anlässt, Kauç. 102. न या रोषति न ग्रभत् Ait. Br. 4, 10. रणे यस्य च रुष्यामि मुहूर्तं स न जीवति R. 3, 35, 27. 7, 59, 2, 21. इन्द्रेण रुष्यता 4, 43, 20. रुष्यती 5, 36, 29. अरुष्यबुष्यमाणस्य (क्रुष्यमाणस्य die eine, क्रुष्यमाणस्य die andere Ausg. des MBh.) मुकृतं नाम विन्दति । डुकृतं चात्मनो मर्षी रुष्यत्येवापमार्ष्टि वै ॥ Spr. 3586. ततो रुष्यत् Bhāṭṭ. 17, 40. मा कर्मणा मनसा वापि वाचा भर्तुर्भवेयं रुषती HARIV. 7796. मा रुषः MBh. 7, 2054. Bhāṭṭ. 15, 16. 52. रुष्य absol. R. 2, 98, 12. partic. रुष्ट (Gegens. तुष्ट) ergrimmt, aufgebracht, erzürnt, sornig Kār. zu P. 3, 2, 188. HARIV. 8121. R. 3, 30, 37. Spr. 622. ऋचिदुष्टः ऋचिदुष्टो रुष्टस्तुष्टः तपो तपो 773. 4851. RĪĀ-TAR. 6, 842. Bhāg. P. 4, 28, 19. 9, 10, 21. 10, 51, 12. MĀRK. P. 91, 27. PAÑĀV. 2, 8, 22. PAÑĀV. 223, 9. KULL. zu M. 9, 313. Bhāṭṭ. 8, 143. 9, 20. पुत्रस्य मातापितरौ यस्य रुष्टावुभावपि zürnend auf MBh. 13, 5457. राजा त्वपि रुष्टः KULL. zu M. 8, 193. मनो ऽतिरुष्टम् Bhāg. P. 4, 19, 34. रुषित = रुष्ट Kār. zu P. 3, 2, 188. M. 9, 88. MBh. 5, 2178. 7297. HARIV. 250. 4305. 7047. 8009. R. 2, 97, 17. R. GORR. 1, 57, 6. 2, 20, 3. 36, 22. 3, 53, 42. 71, 7. 4, 32, 22. Bhāg. P. 10, 41, 34. Bhāṭṭ. 5, 56. 9, 20. एवं स रुषितस्तेन (सैरु° ed. Bomb.) MBh. 7, 6993. VARĀH. Brh. S. 21, 24. मातृगुप्तं प्रति न नो रोषेण रुषितं (beide Ausg. falschlich रू°) मनः RĪĀ-TAR. 3, 282. — 2) Etwas übel aufnehmen: सो अस्म्य कामं विधतो न रोषति RV. 8, 88, 4. — 3) missfallen, zum Ueberdruß sein: न दूनो अस्म्य रोषति der Schmaus ist ihm nicht zuwider RV. 8, 4, 8. इदमकं रुशत्सं ग्रामे तनूहृषिमपौकामि AV. 14, 1, 38. पाशाः missfällig (den Menschen) 4, 16, 6. अर्पजित्कृष्णो रुशती पुनानो या लोकिनी तां तं अग्रो बुकामि die widerliche schwarze 12, 3, 54. रुषती (वाच) missliebig, verletzend MBh. 5, 2744. v. l. für उषती Spr. 1554. 4380. 4698. रुशती 1554, v. l. H. 273. Bhāg. P. 6, 10, 28. जिह्वा eine verletzende Zunge 4, 4, 17. आपः missliebig, gefährlich 9, 9, 24. — रुषित TRIK. 3, 1, 27 fehlerhaft für रूषित.

— caus. रोषयति (रोषे) Dhātup. 32, 131. Jmd unmuthig machen, er-

zürnen, aufbringen: रोषयन्निव माम् R. 5, 36, 86. रोषये त्वा न भोषये 6, 13, 23. रोषित MBh. 1, 5883. 7, 3983. 8, 3194. HARIV. 11260. R. GORR. 1, 42, 6. 2, 20, 2 (23, 2 SCHL.). 4, 5, 16. RAGH. 9, 54. 11, 71. Ça. 9, 18. किं रोषितस्ताता रुशशी त्वया मयि KATHĀS. 14, 50. DAÇAK. 71, 8. PAÑĀV. 163, 4.

— अग्नि, partic. °रुषित ergrimmt, aufgebracht MBh. 8, 1747.

— आ, caus. partic. °रोषित dass.: सिंहाः HARIV. 3936.

— संप्र, partic. °रुष्ट dass. MBh. 12, 4868.

— वि heftig zürnen auf (gen.): अकारणार्थेन विरुष्यमाणा (विक्रु° die neuere Ausg.) प्रेष्याजनस्य HARIV. 7043. विरुष्ट heftig zürnend, sehr aufgebracht KAURAP. 40.

— सम्, partic. °रुषित ergrimmt, aufgebracht: तेन MBh. 7, 6993 nach der Lesart der ed. Bomb. — caus. Jmd erzürnen, in Zorn versetzen: संरोष्यमाणा Spr. 4509. — संरोषयेत् Suçr. 2, 334, 12 und संरोषित 13 gehört zu रूष्.

2. रुष् (= 1. रुष् f. (nom. रुह) Siddh. K. 247, b, 15. Ingrim, Zorn, Wuth AK. 1, 1, 2, 26. H. 299. विमुञ्च मानिनि रुषम् Spr. 1965. रुषा MBh. 1, 575. 3, 2399. R. 4, 5, 29. VIKR. 80. RAGH. 5, 21. Spr. 2237. 3736. KATHĀS. 12, 95. 43, 107. 43, 238. RĪĀ-TAR. 1, 319. 6, 253. SĀH. D. 103. Bhāg. P. 1, 18, 30. 3, 1, 11. 4, 1, 65. 4, 26. 18, 1. MĀRK. P. 18, 36. Vop. 5, 18. रुषोक्तौ AK. 3, 5, 18. अतिरुषा MBh. 4, 459. रुषा फलम् Spr. 901. RĪĀ-TAR. 3, 284. भयरुषोः RAGH. 9, 49. ईर्ष्यारुषाम् KATHĀS. 21, 9. am Ende eines adj. comp.: प्रक्षेत्रनिर्वन्धरुषो हि सतः RAGH. 16, 80. देव्य उड्कितरुषः 19, 20. सरुषि नृपे Spr. 3196. — Vgl. अ°, अति°, अय°.

रुषद् m. N. pr. eines Brahmanen MBh. 9, 2270. fgg. — Vgl. रुशद्.

रुषद् m. N. pr. eines Fürsten VP. 420. — Vgl. रुशद्.

रुषा f. = 2. रुष् H. 299.

रुष्ट 1) partic. adj. s. u. 1. रुष् 1). — 2) m. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 53, b, 34.

रुष्टि gaṇa मधादि zu P. 4, 2, 86. Davon adj. °मन् ebend.

रुष्य gaṇa मधादि zu P. 4, 2, 86. Davon adj. °मन् ebend.

1. रुह, रौकति (बीजजन्मनि प्राडुर्भावे च) Dhātup. 20, 29. रोरुह, रुरोक्यि; अरुहत् und अरुहत् (ved. und episch P. 3, 1, 59), रुह्यम्, अरुह्यम् (MBh. 3, 12776), अरुह्यम् (MBh. 9, 277), अरुह्यम् (HARIV. 6306), रुहाणाः रोह्यति und रोहा Kār. 6 aus Siddh. K. zu P. 7, 2, 10. अरोक्यि MBh. 13, 539; ब्रह्म, रोहम्, रोहितुम् ep., रोह्यि ved. P. 3, 4, 10. ब्रह्म: med. aus metrischen Rücksichten. 1) ersteigen, erklimmen: अग्निं रोहति RV. 8, 41, 8. 61, 4. 4, 110, 6. दिवो रोहस्यरुह्यपृथिव्याः 6, 71, 5. रुहो रोरुह रोहितः AV. 13, 3, 26. VS. 12, 103. Ait. Br. 1, 5. यूपम् ÇaT. Br. 5, 1, 5, 2. वृत्तम् 9, 3, 2, 6. ऋच. Ça. 11, 3, 7. ब्रह्मपरिच्छदाः so v. a. aufgeladen Bhāg. P. 10, 11, 29. erklimmen so v. a. erreichen: कामम् ÇaT. Br. 2, 1, 2, 7. मनो रुहाणाः etwa ihren Willen erreichend RV. 1, 32, 8. — 2) (in die Höhe) wachsen: वया इव रुहः सत विस्रुहः RV. 6, 7, 6. 10, 16, 13. यथा बीजमुर्वरायां रोहति AV. 10, 6, 33. 8, 7, 17. त्रिभिः काण्डेस्त्रीन्स्वर्गानंरुहत् 12, 3, 42. ÇaT. Br. 14, 6, 9, 33. यथा सस्यानि रोहति प्रकीर्णाणि महीतले MBh. 13, 3149. द्विवो हि रोहति तरुः Spr. 925. 3808. ततः सस्यानि नारुहन् MBh. 1, 6623. रोहते — वनं परशुना कृतम् Spr. 2647. रोहते सस्यम् VARĀH. Brh. S. 54, 95. न चापि सर्वबीजानि सम्यघोहति MBh. 3, 12855. 5, 386. यथोषरे बीजमुत न रोहत् 13,